अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2021) दिनांक : 21.12.2021

समय सीमा : 3 घंटा षष्ठम वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

पच्चीस बोल, तत्त्व चर्चा, पच्चीस बोल की चर्चा, पच्चीस बोल की चतुर्भंगी–20

प्र. 1 पच्चीस बोल–किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) योग पन्द्रह का दसवां भेद बताएं।

(ख) बारहवें बोल का चौथा भेद बताएं।

(ग) देवताओं के किन पर्याप्तियों को एक माना गया है?

(घ) सातवें और दसवें आश्रव का नाम लिखें।

(ङ) अठारहवां बोल लिखें।

(च) तेईसवां बोल लिखें।

(छ) सात कोटि त्याग का भांगा लिखें।

प्र. 2 तत्त्व चर्चा–किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) आज्ञा अनाज्ञा शब्द का अर्थ लिखें।

(ख) पाप और पापी एक या दो?

(ग) दिन रात छह में कौन? नौ में कौन?

(घ) पांच समिति छः में कौन? नौ में कौन?

(ङ) छह द्रव्यों में सप्रदेशी कितने? अप्रदेशी कितने? नाम लिखें।

(च) सिद्ध भगवान सूक्ष्म या बादर?

(छ) श्रावक तपस्या का पारणा करे, वह व्रत में या अव्रत में?

प्र. 3 पच्चीस बोल की चर्चा–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें(किसमें व कौन से?)– 6

(क) ग्यारह गुणस्थान।

(ख) पन्द्रह दण्डक।

(ग) चार द्रव्य।

(घ) चौदह गुणस्थान समुच्चय जीव के अलावा किसमें?

(ङ) छह योग

प्र. 4 चतुर्भंगी–किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 4

(क) किस आश्रव के जीव कम, किस आश्रव के जीव अधिक?

(ख) ध्यान किस कर्म का उदय?

(ग) किस निर्जरा के जीव कम, किस निर्जरा के जीव अधिक?

(घ) तुम्हारे में संवर के भेद कितने?

(ङ) आत्मा किस कर्म का उदय?

(च) कौन सा द्रव्य कम, कौन सा द्रव्य अधिक?

प्रतिक्रमण, जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड), कर्म प्रकृति–20

प्र. 5 जैन तत्त्व प्रवेश–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) परमात्म द्वार।

(ख) द्रव्य क्षेत्र काल भाव गुण द्वार–आश्रव, संवर, निर्जरा को विवेचित करें।

(ग) दृष्टांत द्वार–बंध के पश्चात के पांच प्रश्न उत्तर सहित लिखें।

(घ) द्रव्य गुण पर्याय द्वार–सामान्य गुणों को विवेचित करें।

प्र. 6 प्रतिक्रमण–निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर लिखें– 5

(क) कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा ***अथवा*** शक्र स्तुति

प्र. 7 कर्म प्रकृति–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) चारित्र मोह कर्म के लक्षण एवं कार्य का यंत्र लिखें।

(ख) आनुपूर्वी नाम व विहायोगति नाम को विवेचित करें।

(ग) प्रत्येक प्रकृति–दूसरी, पांचवी व सातवीं प्रकृति को व्याख्यायित करें।

(घ) अशुभ नाम कर्म भोगने के हेतु लिखें।

बावन बोल, इक्कीस द्वार, जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड)–20

प्र. 8 बावन बोल–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) उदय के तैत्तीस बोलों में सावद्य कितने, निरवद्य कितने?

(ख) चौदह गुणस्थान कितनेभाव? कितनी आत्मा? ग्यारह गुणस्थान से प्रारंभ कर अंत तक लिखें।

(ग) पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ति, कितने भाव, कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ द्रव्य में कौन?

(घ) संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ङ) बाईस परीषह किस-किस कर्म के उदय में?

प्र. 9 इक्कीस द्वार–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें (कितने व कौन-कौन से?)– 6

(क) असंज्ञी–योग, लेश्या, उपयोग व दण्डक।

(ख) वेदक, सम्यक्त्वी–दण्डक, गुणस्थान, भाव, जीव के भेद।

(ग) अभाषक–उपयोग, जीव का भेद, योग, दृष्टि।

(घ) मतिज्ञानी, श्रुत ज्ञानी–जीव का भेद, गुणस्थान, उपयोग, दण्डक।

(ङ) सास्वादन सम्यक्त्वी–योग, भाव, जीव का भेद, दण्डक।

प्र. 10 जैन तत्त्व प्रवेश–निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) प्रमाण द्वार–नय से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें ***अथवा*** टिड्डी, पतंग, भौरा आदि की पृच्छा।

(ख) दान दया अनुकम्पा द्वार–व्यावहारिक ज्ञान से प्रारम्भ करते हुए .....तिण रो धर्म केम। ***अथवा*** आगम द्वार को प्रारंभ से लिखते हुए उपाङ्ग बारह तक के भी भेद लिखें।

लघु दण्डक व पांच ज्ञान–20

प्र. 11 लघु दण्डक–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) देवों की स्थिति।

(ख) दृष्टि द्वार।

(ग) उत्पत्ति द्वार।

(घ) च्यवन द्वार।

(ङ) तिर्यंच की अवगाहना से प्रारंभ करते हुए खेचर तक लिखें।

प्र. 12 पांच ज्ञान–निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) सम्पूर्ण आकाश के अनंत.....से प्रारंभ करते हुए अंग प्रविष्ट श्रुत तक लिखें ***अथवा*** श्रुत ज्ञान को प्रारंभ से लिखते हुए कालिकी उपदेश तक लिखें।

(ख) अवधिज्ञान का विषय ***अथवा*** परोक्ष ज्ञान–औत्पत्तिकी बुद्धि से प्रारंभ करते हुए अवग्रह आदि का कालमान तक लिखें।

संजया, नियंठा–20

प्र. 13 संजया–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) परिहार विशुद्धि का स्थिति द्वार लिखते हुए बतायें कि अनेक जीवों की अपेक्षा से स्थिति की संगति किस प्रकार बैठती है?

(ख) प्रव्रज्या द्वार से आप क्या समझते हैं? टिप्पण के आधार पर विवेचन कीजिए।

(ग) 'उपसंपद्हान' का अर्थ लिखते हुए टिप्पण पर आधारित व्याख्या करें।

(घ) यथाख्यात चारित्र का परिणाम द्वार लिखते हुए बतायें कि परिणामों की स्थिति किस प्रकार घटित होती है?

प्र. 14 नियंठा–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) समस्त साधुओं की संख्या की संगति प्रत्येक हजार करोड़ किस प्रकार बैठती है, टिप्पण के आधार पर वर्णन करें।

(ख) जयाचार्य ने भगवती की जोड़ में अप्रतिसेवी पाठ के संबंध में अपना क्या अभिप्राय बताया है? स्पष्ट करें।

(ग) बकुश–कल्प द्वार, प्रतिसेवना–काल द्वार, कषायकुशील–कर्म उदीरणा, पुलाक–अंतर द्वार।